अमर उजाला

रूपायन

शुक्रवार
19 जनवरी 2024

भए प्रगट कृपाला

जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिबर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥

– श्री रामचरितमानस, प्रथम सोपान, बालकाण्ड

(Mathura, Ferozabad, Etah, Kasganj) AGRA EDITION

47 वर्षों का अटूट विश्वास

जय श्रीराम

अपनाइये फूलों की
महक वाला

व्हाइट डिटर्जेन्ट पाउडर व केक

website : www.poojadetergents.com

Toll Free : 1800 121 1626

■ विश्वंभरनाथ मिश्र
संकटमोचन मंदिर, वाराणसी के महंत

सरल सबल साहिब रघुराजू...

सबल होते हुए भी सरल होना ही श्रीराम जी का व्यक्तित्व है। सारी ताकत होते हुए भी जमीन से जुड़ा होना और एक-एक व्यक्ति से संवाद करना, यह उनकी विशेषता है।

हमारे श्रीराम सिर्फ अयोध्या के राजा नहीं हैं। वे परमब्रह्म परमेश्वर हैं। गोस्वामी जी ने जिनको 'सरल सबल साहिब रघुराजू...' कहा है।

इसका मतलब यह है कि जो परमब्रह्म परमेश्वर हैं, जिनमें सारे ब्रह्माण्ड की शक्तियां निहित हैं वे कितने सरल हैं। सबल होते हुए भी सरल होना ही श्रीराम जी का व्यक्तित्व है, उनका चरित्र है। सारी शक्तियां, सारी ताकत होते हुए भी जमीन से जुड़ा होना और एक-एक व्यक्ति से संवाद करना उनकी विशेषता है। कहीं भी कोई ऐसा प्रसंग नहीं मिलता, जहां उनके मन में बड़े-छोटे की भावना आई हो। वे हमेशा भक्ति के कायल रहते हैं और हमेशा भक्तों की रक्षा करते हैं। रामराज्य की जो परिकल्पना है, उत्तर कांड में जिसका वर्णन भी है कि 'रामराज बैठे त्रैलोका, हरषित भए गए सब सोका..' ।

हमारी यही कामना है कि हमारे पास भगवान श्रीराम के रूप में ऐसे राजा हैं, जिनके गद्दी पर विराजमान होने से सारे क्लेष, सारे दुख, सारे पाप समाप्त हो जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं। सब लोग हर्षित हो जाते हैं। हर्षित होने में कहीं अकेले या जाति का वर्णन नहीं है, एक सामूहिकता के साथ हर्षित होने की बात कही गई है। सारे लोग खुश हो गए, प्रसन्न हो गए। यह वर्णन भी है कि 'सब नर करहिं परस्पर प्रीती..' । मतलब जाति का या कोई अन्य भेद नहीं है, सारे भेद-भाव, ऊंच-नीच को छोड़कर हर व्यक्ति आपस में प्रेम करता है। इसका आशय यह है कि अगर आप बहुत संपन्न हैं, प्रसन्न हैं, लेकिन आपके पड़ोस में कोई दुखी है तो यह आपको भी पीड़ा पहुंचाएगा। हमारा मन ऐसा होना चाहिए कि हम खुद प्रसन्न हों और हमारे आस-पास के लोग भी प्रसन्न हों, सब निरोग रहें यही रामराज की परिकल्पना है। रामराज में राजा भी ऐसे हैं, जो परम दयालु हैं और सभी से संवाद करते हैं। कभी उनमें युद्ध का भाव चेहरे पर नहीं होता था, लेकिन यह भी था कि अगर किसी ने चुनौती दे दी, तो उसे नतमस्तक भी होना पड़ता था। यह भावना तभी आती है, जब व्यक्ति एकदम सहज हो। सहज होना भी एक तपस्या है। हर जाति, हर वर्ग के व्यक्तियों के साथ भगवान श्रीराम ने मित्रता की। हर रिश्ते को श्रीराम ने दिल से निभाया। केवट हो या सुग्रीव, निषादराज या विभीषण सभी मित्रों के लिए उन्होंने स्वयं कई बार संकट झेले। भगवान श्रीराम एक कुशल प्रबंधक थे। वह सभी को साथ लेकर चलने वाले थे। भगवान श्रीराम के बेहतर नेतृत्व क्षमता की वजह से ही लंका जाने के लिए पत्थरों का सेतु बन पाया।

सबके अपने श्रीराम

हमेशा से समाज अपने आदर्श ढूंढता है। शताब्दियों बाद आज भी प्रभु श्रीराम हमारे सबसे बड़े आदर्श हैं। इसलिए जीवन के विविध मोड़ पर वह याद आते हैं।

■ लव कुश द्विवेदी
अन्तरराष्ट्रीय रामायण एवं वैदिक शोध संस्थान के निदेशक

शताब्दियों बाद आज भी प्रभु श्रीराम और उनकी कथा हमारे लिए अपनी बात कहने का सबसे सटीक और लोकप्रिय तरीका है, सबसे प्रभावी मुहावरा है। इस प्रकार हमारे समाज में पूजनीय होने के साथ ही वे सर्वाधिक प्रासंगिक भी हैं। श्रीराम और रामकथा की लोकप्रियता का एक बड़ा कारण भी है कि वह हर इंसान के सुख-दुख, हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश से जुड़ती तो है ही, श्रीराम सबको अपने लगते हैं, वे सबके हैं, जन-जन के हैं। वे अजातशत्रु हैं, क्योंकि उनका शत्रु रावण भी उनकी महिमा का बखान करता है। रामकथा में ही हमें स्पष्ट दिखता है कि श्रीराम किस प्रकार भरत के हैं, हनुमान के हैं, शबरी के हैं, अहिल्या के हैं, ऋषि-मुनियों के हैं, भालू-वानरों के हैं, जटायु के हैं तो केवट के भी हैं, सभी को वे उनके अपने लगते हैं, सभी उनके लिए कुछ भी करने को तैयार होते हैं। यही कारण है कि हमारे समाज का जन-जन उनसे अपना रिश्ता स्थापित करता है, उन्हें अपना समझता है। श्रीराम का व्यक्तित्व भी प्रेरणादायी है। रामकथा के विभिन्न अवसरों पर हमें दिखता है कि वे किस प्रकार अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हैं।

किसी भी अवसर पर विचलित न होना उनके स्वभाव की विशेषता है। यह विशेषता हमें भी सीख देती है, हर तरह की स्थितियों में जीवनयापन करने का साहस देती है। धैर्य उनकी स्वभावगत विशेषता है और उन्हें आदर्श रूप में देखते हुए हमें भी धैर्य बनाए रखने की शिक्षा मिलती है। अपने वचन पर हर स्थितियों में कायम रहना, बड़ों के आदेशों का अनुपालन करना, सबके प्रति प्रेम की भावना रखना, जीवन में अनुशासन बनाए रखना, प्रसन्न रहना और मर्यादा का पालन करना श्रीराम के चरित्र और व्यवहार की विशेषताएं हैं।

उनकी पूजा करते हुए हम इसका थोड़ा भी प्रभाव ग्रहण कर सकें तो खुद को और समाज को श्रेष्ठ बनाने में मदद मिल सकती है। अगर रामकथा की लोकप्रियता बहुत है तो इसका कारण भी श्रीराम का जन-जन का होना है। महर्षि वाल्मीकि ने 'रामायण' लिखी, विभिन्न भाषाओं, देशों में यह कथा बढ़ती चली गई है। जब गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' की रचना की तो यह कथा घर-घर तक पहुंच गई। आज बहुत कम ऐसे लोग होंगे, जिन्हें मानस की कुछ पंक्तियां याद न हों।

बालकाण्ड

नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला।।
राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता।।

अर्थ ऐसे कराल (कलियुग के) काल में तो नाम ही कल्पवृक्ष हो, जो स्मरण करते ही संसार के सब जंजालों को नाश कर देने वाला है। कलियुग में यह राम नाम मनोवांछित फल देने वाला है। परलोक का परम हितैषी और इस लोक में माता-पिता के समान सब प्रकार से पालन और रक्षण करता है।

एक सीख है रामकथा

रामकथा बताती है कि हमारे आदर्श कैसे हों? हमारे रिश्ते कैसे हों? हमारा समाज कैसा हो और अगर दुश्मन हो तो वह कैसा हो?

अरुण गोविल
रामायण धारावाहिक के राम

प्रभु श्रीराम का जीवन हमारे लिए एक आदर्श है। रामकथा हमें जीवन के हर मोड़ पर सीख देती है। रामकथा यह बताती है कि हमें अपने जीवन में कैसा होना चाहिए। रामकथा बताती है कि हमारे आदर्श कैसे हों, हमारे रिश्ते कैसे हों, हमारा समाज कैसा हो। इस कथा में शत्रुता में भी एक मर्यादा है। रामकथा यह भी बताती है कि हम किसी से दुश्मनी कैसे करें, उसकी भी एक मर्यादा होती है। रामकथा का यह भी संदेश है कि समाज कल्याण और धर्म की रक्षा के लिए हम जो भी कर सकते हैं, करना चाहिए। रामकथा से अच्छा कुछ भी नहीं है।

प्रभु श्रीराम बहुत पराक्रमी थे, लेकिन रामकथा हमें यह भी शिक्षा देती है कि हमें क्रोध को किस प्रकार नियंत्रित रखना चाहिए। रामकथा का 10 या 20 प्रतिशत भाग भी हम अगर जीवन में अपना सकें तो समझना चाहिए कि हम अपने जीवन को श्रेष्ठ बना लिया है। श्रीराम के राज्य में जिस प्रकार का अनुशासन और व्यवहार था, उस तरह के शासन और व्यवहार को लाकर ही हम रामराज्य ला सकते हैं। आजकल श्रीरामचरितमानस पर कुछ लोग टीका-टिप्पणी करते हैं। यह उनका अपना मत हो सकता है। मेरा मानना है कि श्रीरामचरितमानस के शाब्दिक अर्थ के बजाय हमें भावार्थ पर ध्यान देना चाहिए।

इसकी हर चौपाई हमें सीख देती है। हमारे महान ग्रंथों से किसी भी प्रकार की छेड़-छाड़ या उन्हें लेकर विवाद की जरूरत नहीं है। कई बार कुछ लोग शाब्दिक अर्थ में चले जाते हैं, जबकि भावार्थ कुछ और ही होता है। हमें चाहिए कि हम अच्छे रचनाकारों के भावार्थ को समझें। अगर ऐसे विवाद उठे हैं तो उन्हें जल्द से जल्द खत्म करना चाहिए। प्राचीन ग्रंथों में गलत कुछ भी नहीं है।

इसी प्रकार आज कई धारावाहिकों में रामकथा के मूल चरित्रों से भटकाव भी दिखता है। आर्थिक लाभ के लिए इस प्रकार आदर्शों से भटकना गलत है। हमें कथा की मूल भावना से जुड़ना और उसे ही अपनाना चाहिए।

उन्होंने मर्यादा, करुणा, दया, सत्य, सदाचार और धर्म के मार्ग पर चलते हुए राज किया। इस कारण उन्हें आदर्श पुरुष और मर्यादा पुरुषोत्तम भी कहा जाता है। भगवान श्रीराम में अनेक गुण हैं, जो हर व्यक्ति में जरूर होना चाहिए। भगवान श्रीराम में सहनशीलता और धैर्य की परकाष्ठा का विशेष गुण है।

इसका पता इस बात से भी चलता है कि मां कैकेयी की इच्छा एवं आज्ञा से वह 14 वर्ष वनवास के लिए चले गए। अयोध्या का राजा होते हुए भी उन्होंने सन्यासी की तरह जीवन बिताया।

मानस में आदर्श परिवार का मूलमंत्र

रामचरितमानस मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जीवनगाथा होने के साथ साथ पारिवारिक और सामाजिक मर्यादा का महाकाव्य भी है।

■ शुचि सिंह

आदर्श परिवार का पहला मंत्र 'विश्वास' है। पारस्परिक अविश्वास परिवार में कलह और संकट का कारण बनता है। आपसी विश्वास हो तो गलतफहमी से उपजने वाले संकट को बहुत आसानी टाला जा सकता है। रामचरितमानस में इस संदर्भ में बहुत सुंदर प्रसंग है। श्रीराम वनवास को प्रस्थान कर चुके हैं। इसी बीच भरत अयोध्या आते हैं। जब उन्हें यह बात पता चलती है तो वे बहुत दुखी होते हैं। श्रीराम को मनाकर वापस लाने के लिए वे भी वन की ओर चल पड़ते हैं। उनके पीछे-पीछे सेना और एक विशाल जनसमूह चल पड़ता है। इधर जब लक्ष्मण देखते हैं कि भरत भारी भीड़ के साथ आ रहे हैं तो उनके मन में शंका होती है। लक्ष्मण को लगता है कि वन में श्रीराम को मारकर भरत निष्कंटक राज करना चाहते हैं। इसीलिए वे सेना लेकर आ रहे हैं। क्रोधित होकर लक्ष्मण धनुष पर तीर चढ़ा कर श्रीराम से कहते हैं कि भरत को राज मद हो गया है। वे हमें मारने आ रहे हैं। इस पर श्रीराम कहते हैं कि भरत को राजमद हो ही नहीं सकता है। इस संदर्भ में मानस में बहुत सुंदर चौपाई है।

भरतहि होइ न राजमदु बिधि
हरि हर पद पाइ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि
छीरसिंधु बिनसाइ॥

रिश्तों के सूत्र

सीता जब जनकपुर से विदा होकर ससुराल अयोध्या जा रही होती हैं तो सखियां उन्हें जो समझाइश देती हैं, वह एक संस्कारी परिवार का मूलमंत्र है। इस संदर्भ में मानस की निम्नलिखित चौपाइयां किसी सूत्र जैसी हैं।

सास ससुर गुर सेवा करेहू।
पति रुख लख आयसु अनुसरेहू।
अति सनेह बस सखीं सयानी।
नारि धरम सिखवहिं मृदु बानी।

सयानी सखियां अत्यंत स्नेह के साथ उन्हें स्त्री-धर्म सिखाते हुए कहती हैं कि सास, ससुर और गुरु की सेवा करना और पति का रुख देखकर उनकी आज्ञा का पालन करना।

इस चौपाई का भाव यह है कि श्रीराम को अपने भाई पर अगाध विश्वास है। वे कहते हैं कि अयोध्या की राजगद्दी तो छोड़िए ब्रह्मा, विष्णु और महेश का पद पाकर भी भरत को राजमद नहीं हो सकता है। क्या छाछ में डूबी हुई सींक से क्षीरसागर नष्ट हो सकता है।

बालकाण्ड

रामकथा कलि कामद गाई। सुजन सजीवनि मूरि सुहाई।।
सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि। भय भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि।।

अर्थ रामकथा कलियुग में सब मनोरथों को पूर्ण करने वाली कामधेनु गौ है और सज्जनों के लिए सुंदर संजीवनी जड़ी है। पृथ्वी पर यही अमृत नदी है, जन्म-मरणरूपी भय का नाश करने वाली और भ्रमरूपी मेढ़कों को खाने के लिए सर्पिणी है।

भूषन बनमाला, नयन बिसाला

श्रीराम के जीवन का एक बड़ा संदेश यह भी है कि क्रोध को विनम्रता से जीता जा सकता है। इसके साथ ही रिश्तों की हर मर्यादा को पहचानने के सूत्र मिलते हैं उनके पास।

■ शुचि सिंह

सुखी-संपन्न परिवार में विद्वेष की आग लगाने वाले विघ्नसंतोषी भी हर समाज में पाए जाते हैं। अयोध्या में श्रीराम के राजतिलक के उत्सव की तैयारी हो रही थी। चारो तरफ उल्लास था। विघ्नसंतोषी मंथरा से यह देखा न गया। रामचरितमानस में तुलसीदास लिखते हैं-

दीख मंथरा नगरु बनावा।
मंजुल मंगल बाज बधावा
पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू।
राम तिलकु सुनि भा उर दाहू।
करइ बिचारु कुबुद्धि कुजाती।
होइ अकाजु कवनि बिधि राती।

मंथरा ने देखा कि नगर सजा हुआ है। सुंदर मंगलमय बधावे बज रहे हैं। उसने लोगों से पूछा कि यह उत्सव किसलिए है। राम के राजतिलक की बात सुनते ही उसका हृदय जल उठा। कुटिल बुद्धि वाली वह दासी सोचने लगी कि किस तरह से यह काम रात ही रात में बिगड़ जाए। रामचरितमानस ऐसे विघ्नसंतोषी तत्वों को पहचानने और उनसे सावधान रहने की सीख भी देता है।

रामचरितमानस में जीवन का एक बड़ा संदेश यह भी है कि क्रोध को विनम्रता से जीता जा सकता है। सीता के स्वयंवर में धनुष भंग के बाद परशुराम क्रोधित हो जाते हैं। लक्ष्मण के व्यंग्य-वचन उनके क्रोध को चरम पर पहुंचा देते हैं। पूरी सभा थर-थर कांपने लगती है कि अब क्या होगा। ऐसे समय में श्रीराम अपनी विनम्रता से उस क्रोधाग्नि को ठंडी कर देते हैं। श्रीराम अत्यंत विनम्र भाव से कहते हैं-

नाथ करहु बालक पर छोहू।
सूध दूधमुख करिअ न कोहू।
जौं पै प्रभु प्रभाउ कछु जाना।
तौ कि बराबरि करत अयाना।

श्रीराम कहते हैं, हे मुनिनाथ! बच्चे पर दया कीजिए। इस दुधमुंहे बच्चे पर गुस्सा मत करिए। अगर आपके प्रभुत्व का प्रभाव जानता, तो क्या यह नासमझ आपकी बराबरी करता। राम के विनम्र वचनों का यह असर होता है कि परशुराम का गुस्सा ठंडा हो जाता है। वे स्वयं से पूछते हैं कि मेरा फरसा इस राजपुत्र पर क्यों नहीं उठ रहा है। देश हो या परिवार दोनों की समृद्धि में मुखिया का अनुशासन बहुत मायने रखता है। मुखिया के निर्णय का सभी सम्मान करें तभी एकजुटता और प्रगति संभव है।

श्रीराम की शक्ति पूजा में लोक कल्याण

धार्मिक ग्रंथों के अनुसार, राक्षसों पर विजय पाने के लिए भगवान श्रीराम ने भी मां भगवती की आराधना की थी। श्रीराम की इस शक्ति पूजा में प्रत्येक जीव की भलाई के संदेश छिपे हुए हैं।

■ शंकर लाल शास्त्री

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम राक्षसों पर विजय पाने के लिए भगवती की आराधना करते हैं। देवी पुराण भागवत के अनुसार, श्रीराम की तपस्या से प्रसन्न होकर देवी उन्हें विजयश्री का आशीर्वाद देती हैं। आकाशवाणी में कहा गया, “हे रघुवंश शिरोमणि! आप शीघ्र ही लंका पर विजय प्राप्त करेंगे।”

मिथिला की राजकुमारी मां सीता वन्यजीवों पर पुत्रवत स्नेह वृष्टि करती हैं। श्रीराम जब वन से अन्य स्थल पर जाते हैं, तब कहते हैं, “मैथिली अपने पुत्र के समान पाले हुए मृगों, वृक्षों, पर्वतों और सत्ताओं से अब विदाई ले लीजिए।” भास के प्रतिमानाटकम की प्रमुख पात्र मां सीता द्वारा वन्यजीवों और वृक्षों पर मातृवत स्नेह का भाव दर्शाकर आज की नारी शक्ति को वन्य जीवों और प्रकृति के संरक्षण के लिए विशिष्ट रोगदान कर अमिट संदेश दिया है। नवरात्र पर्व पर शक्ति आराधना के माध्यम से देवियों का पूजन-अर्चन करने के साथ-साथ प्रत्येक जीव में ईश्वर का वास मानकर प्रकृति संरक्षण पर बल दिया गया है। चित्रकूट में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अपने भाई भरत से उनके राज्य में वन सुरक्षित होने का प्रश्न कर प्रकृति के कण-कण में शिय-शिया के वास का अमिट संदेश दिया है। कौन नहीं जानता कि श्रीराम ने अपनी वनवास अवधि प्रकृति के बीच रहते हुए ही व्यतीत की थी। युद्ध कांड में श्रीराम कहते हैं, "अत्र सोते त्वया दृष्टा तापसी धर्मचारिणी।" अर्थात सीता को तापसी और धर्म का आचरण करने वाली जैसे पक्षों का उद्देश्य नारी शक्ति का महनीय संदेश देना ही तो है।

अयोध्याकाण्ड

जे गुर चरन रेनु सिर धरहीं। ते जनु सकल बिभव बस करहीं।।
मोहि सम यहु अनुभयउ न दूजें। सबु पायऊँ रज पावनि पूजें।।

अर्थ जो लोग गुरु के चरणों की रज को मस्तक पर धारण करते हैं, वे मानो समस्त ऐश्वर्य को अपने वश में कर लेते हैं। इसका अनुभव मेरे समान दूसरा किसी ने नहीं किया। आपकी पवित्र चरण रज की पूजा करके मैंने सब कुछ पा लिया है।

श्रीराम स्तुति

नमामि भक्त वत्सलं ।
कृपालु शील कोमलं ॥
भजामि ते पदांबुजं ।
अकामिनां स्वधामदं ॥

निकाम श्याम सुंदरं ।
भवाम्बुनाथ मंदरं ॥
प्रफुल्ल कंज लोचनं ।
मदादि दोष मोचनं ॥

प्रलंब बाहु विक्रमं ।
प्रभोऽप्रमेय वैभवं ॥
निषंग चाप सायकं ।
धरं त्रिलोक नायकं ॥

दिनेश वंश मंडनं ।
महेश चाप खंडनं ॥
मुनींद्र संत रंजनं ।
सुरारि वृन्द भंजनं ॥

मनोज वैरि वंदितं ।
अजादि देव सेवितं ॥
विशुद्ध बोध विग्रहं ।
समस्त दूषणापहं ॥

नमामि इंदिरा पतिं ।
सुखाकरं सतां गतिं ॥
भजे सशक्ति सानुजं ।
शची पति प्रियानुजं ॥

त्वदंघ्रि मूल ये नराः ।
भजंति हीन मत्सराः ॥
पतंति नो भवार्णवे ।
वितर्क वीचि संकुले ॥

विविक्त वासिनः सदा ।
भजंति मुक्तये मुदा ॥
निरस्य इंद्रियादिकं ।
प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥

तमेकमद्भुतं प्रभुं ।
निरीहमीश्वरं विभुं ॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं ।
तुरीयमेव केवलं ॥

भजामि भाव वल्लभं ।
कुयोगिनां सुदुर्लभं ॥
स्वभक्त कल्प पादपं ।
समं सुसेव्यमन्वहं ॥

अनूप रूप भूपतिं ।
नतोऽहमुर्विजा पतिं ॥
प्रसीद मे नमामि ते ।
पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥

पठंति ये स्तवं इदं ।
नरादरेण ते पदं ॥
व्रजंति नात्र संशयं ।
त्वदीय भक्ति संयुताः ॥

■ श्री अत्रि मुनि द्वारा रचित

भगवान राम से बड़ा जग में भला कौन ?

मुकेश ऋषि
अभिनेता

रामलीला में मैंने रावण का कई बार किरदार निभाया। जब भी मैं रावण का रोल प्ले करता हूं तो मन में श्रीराम जी का विचार आता है, तब श्रद्धा-भाव से मेरा सिर झुक जाता है। भगवान राम से बड़ा जग में भला कौन है? बेशक रावण ज्ञानी था, गुणवान था, मगर वह क्रोध, लालच और अहंकार के वशीभूत होकर एक ही गलती कर बैठा-श्रीराम से बैर। गलती भी की तो बड़ी गलती, जिसके फलस्वरूप उसे अपनी जान गवानी पड़ी और उसके पूरे कुल का नाश हो गया।

श्रीराम से बड़ा उनका नाम

श्रीराम का वन पथ, सच्चे लोकनायक का पथ है। वन के प्रत्येक प्राणी की मुश्किल उनकी अपनी मुश्किल है। मनीषी कहते हैं, श्रीराम से भी बड़ा उनका नाम है।

■ पूनम नेगी

भारतीय मनीषा ने 'राम' नाम को राष्ट्र का प्राण तत्व माना है। सनातनधर्मियों के बीच अभिवादन और प्रणाम के हर रूप में 'राम-राम' का प्रचलन यूं ही नहीं है। इसके पीछे हमारे ऋषियों का गूढ़ ज्ञान-विज्ञान निहित है। विख्यात मानस मनीषी प्रेम भूषण जी महाराज राम तत्व की अनूठी व्याख्या करते हुए कहते हैं- "राम अर्थात र+अ+म। हिंदी वर्णमाला में र अक्षर 27 नंबर, आ अक्षर 2 नंबर और म अक्षर 25वें नंबर पर आता है। इन तीनों अक्षरों का योग 54 है और दो बार राम कहने से यह योग 108 हो जाता है। इस तरह कोई व्यक्ति 'राम-राम' कहता है तो वह बिना किसी यत्न के राम नाम का एक माला जाप कर लेता है। इससे व्यक्ति के अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।" राम नाम को तारक मंत्र कहा जाता है, इसीलिए जीवन की अंतिम यात्रा के समय 'राम नाम सत्य है' का उद्घोष किया जाता है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का पतित पावन नाम जन्म से मृत्यु तक हर सनातनधर्मी के जीवन से गहराई से जुड़ा है। हिमालय से कन्याकुमारी तक ही नहीं, सुदूर पूर्व के अनेक देशों में भी श्रीराम का नाम असाधारण श्रद्धा के केंद्र बिंदु हैं। लोकनायक श्रीराम भारतीय समाज में मर्यादा, आदर्श, विनय, विवेक और लोकतांत्रिक मूल्यों का पर्याय माने जाते हैं। 14 वर्ष के वनवास काल में श्रीराम के जीवन में बहुत कुछ ऐसा घटा, जिसने उनके जीवन को पूरी तरह बदल दिया और वे अयोध्या के राजकुमार राम से लोकनायक श्रीराम में रूपांतरित हो गए। इस वन पथ में श्रीराम ने उत्तर से दक्षिण तक संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधा। इस वन पथ में वे अपने चरित्र द्वारा एक अनोखे सेतु का निर्माण कर सारे समाज को जोड़ते दिखाई देते हैं। इसीलिए भारतीय संतों और चिंतकों का विश्वास है कि जब सारे सेतु (उपाय) टूट जाएंगे तो भी श्रीराम का सेतु सारे समाज को मिलाने के लिए सदा-सर्वदा प्रस्तुत रहेगा।

भगवान श्रीराम के जीवन का बारीकी से अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि उनको दैवीय शक्तियां प्राप्त थीं। वे चाहते तो एक इशारे में कुछ भी कर सकते थे, लेकिन उन्होंने हर काम एक आम व्यक्ति की भांति किया, ताकि लोग उनसे सीख ले सकें। तत्कालीन समाज वर्ण-भेद का अभिशाप भोग रहा था। छोटी जाति के साथ बड़ी जाति वालों के दुराभाव के कारण समाज के लोगों के आचरण में प्रेम, सेवा और सहयोग का अभाव था, किंतु गंगा पार कर वन पथ पर बढ़ते समय वे निषादराज को हृदय से लगाते हैं। मकसद था सामाजिक समानता का लोक-शिक्षण।

अयोध्याकाण्ड

चहत न भरत भूपतहि भोरें। बिधि बस कुमति बसी जिय तोरें।।
सो सबु मोर पाप परिनामू। भयउ कुठाहर जेहिं बिधि बामू।।

अर्थ

भरत तो भूलकर भी राजपद नहीं चाहते।
होनहारवश तेरे ही जी में कुमति आ बसी।
यह सब मेरे पापों का परिणाम है, जिससे कुसमय में विधाता विपरीत हो गया।

भए प्रगट कृपाला

भए प्रगट कृपाला दीन दयाला... श्री रामावतार की स्तुति है। यह स्तुति श्री तुलसीदास द्वारा रचित, रामचरितमानस के बालकाण्ड में है। स्तुति का हर अंश हमें सकारात्मक ऊर्जा देती है।

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला,
कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी,
अद्भुत रूप बिचारी ।।

अर्थ- माता कौशल्या जी के हितकारी और दीन-दुखियों पर दया करने वाले कृपालु भगवान आज प्रगट हुए। मुनियों के मन को हरने वाले तथा सदैव मुनियों के मन में निवास करने वाले भगवान के अद्भुत रूप का विचार करते ही सभी माताएं हर्ष से भर गईं।

लोचन अभिरामा, तनु घनस्यामा,
निज आयुध भुजचारी।
भूषन बनमाला, नयन बिसाला,
सोभासिंधु खरारी ।।

अर्थ- जिनका दर्शन नेत्रों को आनंद देता है, जिनका शरीर बादलों के जैसा श्याम रंग का है तथा जो अपनी चारों भुजाओं में अपने शस्त्र धारण किए हुए हैं। जो वन माला को आभूषण के रूप में धारण किए हुए हैं, जिनके नेत्र बहुत ही सुंदर और विशाल हैं तथा जिनकी कीर्ति समुद्र की तरह अपूर्णनीय है, ऐसे खर नामक राक्षक का वध करने वाले भगवान आज प्रकट हुए हैं।

कह दुई कर जोरी, अस्तुति तोरी, केहि बिधि
करूं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना, वेद पुरान भनंता ।।

अर्थ- दोनों हाथ जोड़कर माताएं कहने लगीं, हे अनंत! (जिसका पार न पाया जा सके) हम तुम्हारी स्तुति और पूजा किस विधि से करें, क्योंकि वेदों और पुराणों ने तुम्हें माया, गुण और ज्ञान से परे बताया है।

करुना सुख सागर, सब गुन आगर,
जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी, जन अनुरागी,
भयउ प्रगट श्रीकंता ।।

अर्थ- दया, करुणा और आनंद के सागर तथा सभी गुणों के धाम जिनके बारे में श्रुतियां और संतजन हमेशा बखान करते रहते हैं। जन-जन से अपनी प्रीति रखने वाले ऐसे श्रीहरि नारायण भगवान आज मेरा कल्याण करने के लिए प्रकट हुए हैं।

ब्रह्मांड निकाया, निर्मित माया, रोम
रोम प्रति बेद कहै ।
मम उर सो बासी, यह उपहासी, सुनत
धीर मति थिर न रहै ॥

अर्थ- जिनके रोम-रोम से कई ब्रह्मांडों का सृजन होता है और जिन्होंने संपूर्ण माया का निर्माण किया है, ऐसा वेद बताते हैं। माता कहती हैं कि ऐसे भगवान मेरे गर्भ में रहे, यह बहुत ही आश्चर्य और हास्यास्पद बात है, जो भी धीर व ज्ञानी जन यह घटना सुनते हैं वे अपनी बुद्धि खो बैठते हैं।

श्रीराम और भक्त हनुमान

श्रीराम की चर्चा हो और भक्त हनुमान का जिक्र न हो तो कथा अधूरी सी लगती है। श्रीराम तक पहुंचने का एक रास्ता भक्त हनुमान के पास से भी गुजरता है। मान्यता है, जिन्होंने भक्त हनुमान की प्रार्थना की, वह श्रीराम तक जरूर पहुंची।

हिंदू धर्म में हनुमान जी भगवान श्रीराम के सबसे बड़े भक्त और समर्पण के प्रतीक हैं। हनुमान जी को अंजनी पुत्र, पवन पुत्र, संकट मोचन, राम भक्त, महाबली, बजरंगबली जैसे अनेक नामों से जाना जाता है। साथ ही हनुमान जी को चिरंजीवी भी कहा जाता है। चिरंजीवी यानी की अजर-अमर। कहा जाता है कि वे आज भी पृथ्वी पर सशरीर मौजूद हैं और अपने भक्तों की परेशानियों को सुनते हैं एवं उनके संकटों को हरते हैं।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार, भगवान हनुमान पहली बार भगवान श्रीराम से किष्किंधा कांड के दौरान ऋष्यमुख पर्वत पर मिले थे। उस समय हनुमान जी सुग्रीव के मंत्री थे। सुग्रीव को सूचना मिली कि दो युवक धनुष-बाण से सुसज्जित होकर पर्वत की ओर बढ़ रहे हैं। इस विचार से भयभीत होकर कि शायद उनके भाई बाली ने उन्हें भेजा है, सुग्रीव ने हनुमान जी से अनुरोध किया कि वे पहले जाएं और राजकुमार जैसे दिखने वाले युवाओं के साथ बातचीत करें।

सुग्रीव के आदेश के अनुसार, भगवान हनुमान एक साधु का भेष बनाकर उनके पास आए। भगवान हनुमान ने उनके साथ बहुत प्रभावशाली तरीके से बात की, उन्होंने भगवान श्रीराम और लक्ष्मण की उनके रूप आदि के

बारे में प्रशंसा की। इससे भगवान श्रीराम बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने हनुमान जी को बताया कि वे वास्तव में कौन हैं। यह जानकर कि वह जिन दो राजकुमारों से बात कर रहे हैं, वे कोई और नहीं, बल्कि उनके प्रिय भगवान श्रीराम और उनके भाई लक्ष्मण हैं, तो हनुमान जी भगवान श्रीराम के चरणों में गिर गए। पहली मुलाकात में ही भगवान श्रीराम और हनुमान जी के बीच एक अमर बंधन बन गया।

एक कथा के अनुसार, रावण का वध करने और लंका पर विजय प्राप्त करने के बाद प्रभु श्रीराम अयोध्या लौटे, तब उन्होंने युद्ध में साथ देने वाले सभी वीरों को उपहार दिया। तभी भगवान श्रीराम ने भक्त हनुमान को आशीर्वाद दिया कि हे कपि श्रेष्ठ! इस संसार में जब तक राम कथा प्रचलित रहेगी, तब तक तुम्हारी कीर्ति अमिट रहेगी। तुम्हारे शरीर में प्राण रहेंगे। भक्त हनुमान के चिरंजीवी होने के बारे में और भी कथाएं हैं। एक दूसरी कथा के अनुसार अशोक वाटिका में माता सीता को जब हनुमान जी ने अंगूठी दी थी, तब माता सीता ने हनुमान जी को चिरंजीवी होने का वरदान दिया था।

अयोध्याकाण्ड

चलन चहत बन जीवन नाथू। केहि सुकृती सन होइहि साथू।।
की तन प्रान कि केवल प्राना। बिधि करतबु कछु जाइ न जाना।।

अर्थ

जीवननाथ वन को चलना चाहते हैं। देखें किस पुण्यवान से उनका साथ होगा। शरीर और प्राण दोनों साथ जाएंगे या केवल प्राण ही से इनका साथ होगा? विधाता की करनी कुछ जानी नहीं जाती।

जाके बल से गिरवर कांपे

श्री हनुमान जन्मोत्सव, मंगलवार व्रत, शनिवार पूजा, बूढ़े मंगलवार और अखंड रामायण के पाठ में श्री हनुमान आरती की महत्ता कुछ और ही है। इसके बिना पूजा अधूरी है।

॥ आरती ॥

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

जाके बल से गिरवर काँपे।
रोग-दोष जाके निकट न झाँके॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई।
संतन के प्रभु सदा सहाई॥
आरती कीजै हनुमान लला की।।

दे वीरा रघुनाथ पठाए।
लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई॥
आरती कीजै हनुमान लला की॥

लंका जारि असुर संहारे।
सियाराम जी के काज सँवारे॥
लक्ष्मण मुर्छित पड़े सकारे।
लाये संजिवन प्राण उबारे॥
आरती कीजै हनुमान लला की॥

पैठि पताल तोरि जमकारे।
अहिरावण की भुजा उखारे॥
बाईं भुजा असुर दल मारे।
दाहिने भुजा संतजन तारे॥
आरती कीजै हनुमान लला की॥

सुर-नर-मुनि जन आरती उतारें।
जय जय जय हनुमान उचारें॥
कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरती करत अंजना माई॥
आरती कीजै हनुमान लला की॥

जो हनुमानजी की आरती गावे।
बसहिं बैकुंठ परम पद पावे॥
लंक विध्वंस किये रघुराई।
तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई॥

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥
॥ इति संपूर्णम् ॥

॥ श्री हनुमंत स्तुति ॥

मनोजवं मारुत तुल्यवेगं,
जितेन्द्रियं, बुद्धिमतां वरिष्ठम्॥
वातात्मजं वानरयुथ मुख्यं,
श्रीरामदुतं शरणम प्रपद्धे॥

■ **भगवान राम और उनके शिष्य भगवान हनुमान के बीच के दिव्य संबंध को केवल शब्दों से वर्णित नहीं किया जा सकता है। इसे महसूस करने के लिए हमें भी भक्त बनना पड़ेगा।**

जनकपुर में श्रीराम

वाल्मीकि रामायण के अनुसार, माता सीता का जन्म जनकपुर में हुआ था। जनकपुर का प्राचीन नाम मिथिला तथा विदेहनगरी था। भगवान श्रीराम से विवाह के पहले सीता ने ज्यादातर समय यहीं व्यतीत किया था। यहीं माता सीता का विवाह भी हुआ। जनकपुर के जानकी मंदिर के पास ही रंगभूमि नाम का स्थान है। जहां विवाह से पहले श्रीराम ने शिवजी का पिनाक धनुष तोड़ा था। रामायण के अनुसार, इस जगह धनुष तोड़ने पर बहुत तेज विस्फोट हुआ और धनुष के टुकड़े करीब 18 किलोमीटर दूर तक जाकर गिरे। जहां आज धनुषा धाम बना है। इसके अलावा जनकपुर के पास ही रानी बाजार नाम की जगह पर मणिमंडप स्थान है। डॉ. रामावतार के शोध के अनुसार यह वही स्थान है, जहां सीता-राम का विवाह हुआ था।

रंगभूमि

वाल्मीकि रामायण में जनक के यज्ञ स्थल यानि वर्तमान जनकपुर के जानकी मंदिर के निकट एक मैदान है, जो रंगभूमि कहलाता है। लोक मान्यता के अनुसार इसी मैदान में देश-विदेश के बलशाली राजाओं के बीच शंकर जी का पिनाक धनुष तोड़कर श्रीराम ने सीता जी से विवाह की शर्त पूर्ण की थी। रामचरितमानस में भी इसे रंगभूमि कहा है।

जनकपुर मंदिर

वाल्मीकि रामायण के अनुसार माता सीता का जन्म जनकपुर में हुआ था। यहां माता सीता का मंदिर बना हुआ है। ये मंदिर करीब 4860 वर्ग फीट में फैला हुआ है। मंदिर के विशाल परिसर के आस-पास लगभग 115 सरोवर हैं। इसके अलावा कई कुंड भी हैं। इस मंदिर में मां सीता की प्राचीन मूर्ति है, जो 1657 के आस-पास की बताई जाती है। यहां के लोगों के अनुसार, एक संत यहां साधना-तपस्या के लिए आए। इस दौरान उन्हें माता सीता की एक मूर्ति मिली, जो सोने की थी। उन्होंने ही इसे वहां स्थापित किया था।

अयोध्याकाण्ड

आपन मोर नीक जौं चहहू। बचन हमार मानि गृह रहहू।।
आयसु मोर सासु सेवाकाई। सब बिधि भामिनि भवन भलाई।।

अर्थ

जो अपना और मेरा भला चाहती हो,
तो मेरा वचन मानकर घर रहो। हे भागिनी मेरी आज्ञा का पालन होगा।
सास की सेवा बन पड़ेगी। घर में सभी प्रकार से भलाई है।

रावण ने कहा था अंतिम समय में मेरे पास रहना श्रीराम

यज्ञ संपन्न होने के बाद रावण ने श्रीराम से कहा था, " मेरे अंतिम समय में आप दोनों भाई मेरे पास उपस्थित रहना, यही मेरी दक्षिणा होगी। "

अखिलेश आर्येन्दु

श्रीरामचरितमानस और दूसरी रामायणों के मुताबिक, लंका विजय के पहले श्रीराम ने शिव की पूजा करनी चाही। लेकिन शिव की पूजा बगैर यज्ञ की पूरी नहीं हो सकती थी। उस समय रावण जैसा महाज्ञानी, यज्ञ संपन्न करने वाला कोई पुरोहित नहीं था। ऐसे में समस्या यह थी कि जिस लंका पर विजय हासिल करनी है, उसी लंका के राजा रावण से यज्ञ कराने के लिए किस व्यक्ति को भेजा जाए? जामवंत गए और रावण से कहा, ''दो वनवासी यज्ञ कराना चाहते हैं। क्या आप उनका यज्ञ संपन्न करा देंगे? रावण ने कहा, मेरे द्वार पर जो आता है वह खाली हाथ नहीं जाता, लेकिन यज्ञ बिना पत्नी के संपन्न नहीं होता। यह बताइए क्या उनकी पत्नी उनके साथ हैं? जामवंत ने कहा, उनके साथ उनकी पत्नी तो नहीं हैं। तब रावण ने कहा, ''पुरोहित का कर्तव्य होता है कि विधि-विधान से पूजा संपन्न कराने के लिए सारी व्यवस्था स्वयं करके जाए।'' ठीक समय पर दसशीश रावण यज्ञ कराने रामेश्वरम पहुंच गए। श्रीराम ने बड़ी विनम्रता से अभिवादन कर स्वागत किया। रावण ने पूछा,''यज्ञ में पति-पत्नी दोनों का रहना आवश्यक होता है।

आपकी पत्नी कहां हैं? श्रीराम ने कहा, वह तो नहीं हैं। रावण ने कहा, मैंने वचन दिया था कि यज्ञ में जिस-जिस चीज की कमी होगी, उसे मैं लेकर आऊंगा। तब तक मां सीता रथ पर बैठकर आ पहुंचीं थीं। यज्ञ संपन्न होने के बाद श्रीराम ने अपने यज्ञ पुरोहित रावण से कहा, ''महाराज, आप जानते हैं बिना दक्षिणा दिए यज्ञ पूरा नहीं होता।'' रावण ने कहा, ''यदि देना ही चाहते हो तो मेरे अंतिम समय में आप दोनों भाई मेरे पास उपस्थित रहना, यही मेरी दक्षिणा होगी।''

पेंटिंग : बिजय बिस्वाल

वनपथ के सच्चे लोकनायक

श्रीराम की व्यवस्था सबको आगे बढ़ने की प्रेरणा और ताकत देती है। वे अत्यंत कुशल प्रबंधक हैं। उनमें संगठन की अद्भुत क्षमता है।

■ पूनम नेगी

प्रभु श्रीराम का कर्तव्यपरायण वनवासी जीवन हर युग के लिए अद्भुत प्रेरणा स्रोत है। वन में राम, लक्ष्मण सीता परिश्रम से जीवन यापन करते हैं। स्वयं कुटी बनाते हैं, स्वयं ईंधन की लकड़ी, फल, कंदमूल लाते हैं, सीता स्वयं भोजन बनाती हैं।

उन्होंने वन में जटायु, शबरी, सुग्रीव, हनुमान आदि साधारण वनवासियों की मदद से अल्प साधनों में ही स्वयं के पराक्रम से रावण जैसी उस युग की सर्वाधिक शक्तिशाली आसुरी शक्ति को पराजित किया। श्रीराम की व्यवस्था सबको आगे बढ़ने की प्रेरणा और ताकत देती है। वे अत्यंत कुशल प्रबंधक हैं। उनमें संगठन की अद्भुत क्षमता है। हनुमान, सुग्रीव, जामवंत, नल, नील सभी को समय-समय पर नेतृत्व का अधिकार उन्होंने दिया। जब दोनों भाई अयोध्या से चले तो महज तीन लोग थे, किंतु जब लौटे तो पूरी सेना के साथ एक साम्राज्य का निर्माण कर। वनवास काल में श्रीराम ने उत्तर से दक्षिण तक संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधा।

वाल्मीकि रामायण में उल्लेख है, वनवास काल में सीता जी को पतिव्रत धर्म की शक्ति का बोध ऋग्वेद के पंचम मंडल के द्रष्टा अत्रि ऋषि की पत्नी अनुसूइया ने ही कराया था। अत्रि ऋषि के कहने पर श्रीराम ने उस क्षेत्र के राक्षसों का अंत कर अपने वनवास के 11 साल चित्रकूट में बिताए थे। तत्पश्चात सुतीक्षण मुनि के कहने पर वे महामुनि अगस्त्य का आशीर्वाद लेने उनके आश्रम गए। महर्षि अगस्त्य ने निकट भविष्य में उनके लंकापति रावण से होने वाले धर्मयुद्ध के लिए उन्हें अनेक दिव्य अस्त्र-शस्त्र, अमोघ कवच तथा 'आदित्य हृदय स्तोत्र' मंत्र प्रदान किए थे। श्रीराम ने अपने वनवास के कुछ दिन इस भद्रगिरि पर्वत भी पर ही बिताए थे। इसी के निकट पंचवटी नामक स्थान से सीता जी के अपहरण के बाद दंडकारण्य में रावण और जटायु का युद्ध हुआ। इसीलिए दुनियाभर में सिर्फ यहीं पर जटायु का एकमात्र मंदिर है। कहते हैं कि सीता की खोज में निकले श्रीराम मतंग मुनि के आश्रम जाकर वहां जाति से भीलनी महातपस्वनी माता शबरी के झूठे बेर खाकर जिस 'नवधा भक्ति' का उपदेश देते हैं, वह भक्तियोग की अमूल्य निधि मानी जाती है। वर्तमान में माता शबरी का यह आश्रम केरल में स्थित है तथा केरल का विश्व प्रसिद्ध 'सबरीमला मंदिर' इसी के निकट स्थित है। सार रूप में कहें तो श्रीराम का वनपथ सच्चे लोकनायक का पथ है।

अयोध्याकाण्ड

जहँ लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई।।
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी। दीनबंधु उर अंतरजामी।।

अर्थ जगत में जहां तक स्नेह का संबंध, प्रेम और विश्वास है, जिनको स्वयं वेद ने गाया है- हे स्वामी, हे दीन बंधु, हे सबके हृदय के अंदर की जानने वाले। मेरे तो वे सब कुछ केवल आप ही हैं।

श्रीराम की मर्यादा

श्रीराम का चरित्र हमें मर्यादा का पालन करते हुए अन्याय के विरुद्ध लड़ने की शिक्षा देता है।

■ आशुतोष वार्ष्णेय

मर्यादा में रहकर भवसागर से कैसे तरना है, इसका उदहारण श्रीराम के चरित्र में मिलता है, फिर वह चाहे एक पुत्र की मर्यादा हो अथवा भाई की मर्यादा, पति की मर्यादा, क्षत्रिय धर्म की मर्यादा, मानवीय मूल्यों की मर्यादा, राजा की मर्यादा इत्यादि, सभी मर्यादाओं का पालन विषम परिस्थितियों में राम ने कष्टों को सहते हुए किया। त्रेतायुग से लेकर कलियुग में आज भी श्रीराम की मर्यादा सभी के लिए प्रासंगिक है। प्रत्येक परिस्थिति में मानव, मर्यादा का पालन कर अन्याय के विरुद्ध लड़ सकता है, यही शिक्षा श्रीराम के चरित्र को सभी में उत्तम बनाती है।

श्रीराम मर्यादा पुरूषोत्तम इसलिए कहलाते हैं, क्योंकि उन्होंने जीवन में कभी भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया, माता-पिता और गुरुजनों की आज्ञा का पालन करते हुए सभी सामाजिक मर्यादाओं का पूर्णतः पालन किया, पूरे 14 वर्ष उन्होंने वन में बिताकर एक आदर्श प्रस्तुत किया। यहां तक कि मर्यादा को निभाने के लिए अपनी पत्नी सीता तक का त्याग कर दिया। श्रीराम का चरित्र इस बात का पर्याय है कि चाहे कितनी भी कठिन से कठिन परिस्थितियां जीवन में आ जाएं, लेकिन समाज को और आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा देने के लिए अपनी मर्यादाओं का पालन करना चाहिए। महाकवि कालिदास ने श्रीराम के पृथ्वी पर अवतरण का अत्यंत काव्यमय वर्णन किया है। कालिदास कहते हैं, श्रीराम जन्म के समय, ''बालक के तेज से सूतिकागृह के दीपकों की ज्योति मंद पड़ गई थीं'' तथा उस समय ''संसार के सारे दोष भाग गए और चारो ओर गुण ही गुण फैल गए मानो स्वर्ग भी भगवान विष्णु का अनुसरण करता हुआ पृथ्वी पर उतर आया हो।''

दूसरी तरफ श्रीराम जन्म के समय कालिदास लंका में उस समय घटने वाले अपशकुनों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि रावण के मुकुटों से कुछ मणि पृथ्वी पर गिर पड़ीं मानो राक्षसों की लक्ष्मी अपने दुर्भाग्य पर आंसू बहा रही हो। भारतीय जनमानस में सबसे अधिक छाप है श्रीराम की। श्रीराम ईश्वर के रूप में जनमानस में व्याप्त हैं। हमारे जीवन की समस्या कितनी भी गहन तथा गंभीर क्यों न हो, अवश्य ही श्रीराम नाम की औषधि से हल हो सकती है, केवल आवश्यकता है विश्वास की, क्योंकि अंततोगत्वा अपना विश्वास ही फलता है। श्रीराम तो श्रीराम हैं, नाम की महिमा इतनी है कि नाम के प्रभाव से सागर भी बंध गया और पत्थर भी तैर गए, तो क्यों न हम सब भी श्रीराम नाम के प्रभाव से भवसागर को पार करें। श्रीराम तो मार्गदर्शन करते हैं, मर्यादा का पालन और जीवन की यात्रा हर जीव को स्वयं करनी पड़ती है। सदियों से यह कहा जाता है, श्रीराम से बड़ा श्रीराम का नाम। श्रीराम का नाम सत्य है तथा समस्त वेद, पुराण के तुल्य हैं। कलियुग केवल नाम अधारा, जहां श्रीराम का नाम है, वहां सब कुछ है, अन्यत्र कुछ भी नहीं। हमारे मानस पटल पर जब श्रीराम का विराट स्वरूप अपने मर्यादा पुरूषोत्तम रूप में उभरता है, तब कुछ भी समस्या शेष नहीं रह जाती।

श्रीराम कथा में आदर्श परिवार

रामचरितमानस मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जीवनगाथा होने के साथ-साथ पारिवारिक और सामाजिक मर्यादा का महाकाव्य भी है। श्रीराम की इस गाथा में आदर्श परिवार का मूलमंत्र छिपा है।

■ शुचि सिंह

रामचरितमानस में इस संदर्भ में बहुत सुंदर प्रसंग है।

श्रीराम वनवास को प्रस्थान कर चुके हैं। इसी बीच भरत अयोध्या आते हैं। जब उन्हें यह बात पता चलती है तो वे बहुत दुखी होते हैं। श्रीराम को मनाकर वापस लाने के लिए वे भी वन की ओर चल पड़ते हैं। उनके पीछे-पीछे सेना और एक विशाल जनसमूह चल पड़ता है।

इधर जब लक्ष्मण देखते हैं कि भरत भारी भीड़ के साथ आ रहे हैं तो उनके मन में शंका होती है। लक्ष्मण को लगता है कि वन में राम को मारकर भरत निष्कंटक राज करना चाहते हैं। इसीलिए वे सेना लेकर आ रहे हैं। क्रोधित होकर लक्ष्मण धनुष पर तीर चढ़ा कर राम से कहते हैं कि भरत को राज मद हो गया है। वे हमें मारने आ रहे हैं। इस पर श्रीराम कहते हैं कि भरत को राज मद हो ही नहीं सकता है।

इस संदर्भ में मानस में बहुत सुंदर चौपाई है।

भरतहि होइ न राजमदु बिधि हरि हर पद पाइ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ॥

इस चौपाई का भाव यह है कि राम को अपने भाई पर अगाध विश्वास है। वे कहते हैं कि अयोध्या की राजगद्दी तो छोड़िए ब्रह्मा, विष्णु, महेश का पद पाकर भी भरत को राज मद नहीं हो सकता है। रामचरितमानस में जगह-जगह भारतीय संस्कारों को पुष्ट करने वाले प्रसंग हैं। सीता जब जनकपुर से विदा होकर ससुराल अयोध्या जा रही होती हैं तो सखियां उन्हें जो समझाइश देती हैं, वह एक संस्कारी परिवार का मूलमंत्र है। इस संदर्भ में मानस की निम्नलिखित चौपाइयां किसी सूत्र जैसी हैं।

सास ससुर गुर सेवा करेहू।
पति रुख लख आयसु अनुसरेहू।
अति सनेह बस सखीं सयानी।
नारि धरम सिखवहिं मृदु बानी।

सयानी सखियां अत्यंत स्नेह के साथ उन्हें स्त्री-धर्म सिखाते हुए कहती हैं कि सास, ससुर और गुरु की सेवा करना और पति का रुख देखकर उनकी आज्ञा का पालन करना।

अयोध्याकाण्ड

भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जग जाल।।

अर्थ वही कृपालु श्रीरामचंद्रजी भक्त, भूमि, ब्राहमण, गौ और देवताओं के हित के लिए मनुष्य शरीर धारण करके लीलाएं करते हैं, जिनके सुनने से जगत के जंजाल मिट जाते हैं।

बेमिसाल मित्रता के स्वामी

मित्रता की मिसाल लोक में अनेक मिल जाएंगी, लेकिन श्रीराम की मित्रता अपने आप में बेमिसाल है। श्रीराम ने जिनसे भी मित्रता की, उसे दिल से निभाया।

■ अखिलेश आर्येन्दु

पेंटिंग : बिजय बिस्वाल

श्रीराम की मित्रता उन आदर्शों पर आधारित है, जो मित्र शब्द को सार्थकता प्रदान करने वाली है। श्रीराम के मित्र के रूप निषादराज, सुग्रीव और विभीषण हैं। तीनों तीन वर्ण से आते हैं। एक अति सामान्य वर्ग, जो नाव चलाकर जीविका का उपार्जन करता है। जिसका जीवन अत्यंत पवित्र और सेवाभावी है। श्रीराम वनवास के लिए अपनी पत्नी जनक नंदनी सीता, अनुज लक्ष्मण के साथ चौदह साल के लिए वन गमन को जा रहे हैं। बीच में नदी पड़ती है। वहीं राम के जीवन में पहले मित्र के रूप में निषादराज आए। नदी पार करनी थी, लेकिन उतराई के लिए धन नहीं था। नदी पार किया और सीता ने अपनी अंगूठी निकाल कर उतराई देनी चाही, लेकिन निषादराज ने मनाकर करते हुए कहा, प्रभु! मैं उतराई लेकर क्या करूंगा। लेकिन श्रीराम तो श्रीराम हैं। तब निषादराज ने कहा, प्रभु! आप उतराई देना चाहते ही हैं तो यह उधारी रहेगा। श्रीराम यह सुनकर मुस्कुरा दिए।

सुग्रीव और श्रीराम की मित्रता भी मित्रता की एक मिसाल है। माता सीता के हरण के बाद श्रीराम जब किष्किंधा पर्वत पर पहुंचे, तब सुग्रीव से मित्रता होती है। हनुमान जी से भेंट हुई। हनुमान श्रीराम को सुग्रीव के पास ले जाते हैं। सुग्रीव ने प्रणाम करते हुए कहा, ''मैं सूर्यपुत्र सुग्रीव आप को प्रणाम करता हूं। तब श्रीराम उस अभिवादन का उत्तर अभिवादन से देते हुए कहते हैं,''मैं दशरथ नंदन राम महाराज सुग्रीव को प्रणाम करता हूं। इस पर सुग्रीव कहते हैं, ''आप ने एक सिंहासनविहीन को महाराज कहकर संबोधित किया, यह आप की विशालता का सूचक है। तब श्रीराम बोले, ''हृदय की विशालता की नहीं, यह हमारे हृदय की अभिलाषा का सूचक है। हम आप को सदा महाराज के रूप में ही देखेंगे।

श्रीराम के तीसरे मित्र विभीषण हैं। विभीषण यानी रावण का भाई। रावण के सताए जाने पर विभीषण श्रीराम के पास आए और अपनी वेदना बताई। रावण के अत्याचार और उसके अजेय होने का रहस्य श्रीराम को बताने वाले विभीषण ही थे। श्रीराम के प्रति विभीषण की भावना पवित्र और पूर्ण समर्पित भाव वाली थी। राम ने विभीषण को लंका का राजा बनाने का वचन दिया और उसे पूरा कर दिखाया। राम ने मित्रता निभाते हुए अपने वचन को पूरा ही नहीं किया बल्कि यह साबित भी किया कि वे वचन के पक्के हैं।

भ्रातृ प्रेम के दिव्य दर्शन

श्रीराम के वन जाने के बाद जब कुलगुरु भरत जी को राजगद्दी संभालने को कहते हैं तो वह अपने तर्कों से पूरी राजसभा को निरुत्तर कर श्रीराम को वापस अयोध्या लाने चित्रकूट जा पहुंचते हैं।

■ पूनम नेगी

श्रीराम, लक्ष्मण व भरत के भ्रातृ प्रेम की दिव्यता पर जरा गहराई से विचार करके तो देखिए! एक तरफ श्रीराम के वनवास की खबर सुनते ही एक झटके में अपना सारा राजसी सुख वैभव और यहां तक कि पत्नी तक को छोड़कर सीताराम के साथ वन जाने को प्रस्तुत लक्ष्मण हैं तो वहीं दूसरी ओर अयोध्या जैसे परम वैभवशाली राज्य के सिंहासन को ठुकराकर वल्कल वस्त्र धारणकर 14 वर्षों तक श्रीराम के राज्य की व्यवस्था संभालने वाले भरत; क्या इनमें से किसी के भी त्याग, प्रेम, समर्पण और निष्ठा को एक दूसरे से कम या ज्यादा आंकना उचित होगा? कदापि नहीं। शास्त्रीय उद्धरण इस बात के साक्षी हैं कि श्रीराम व सीता माता के साथ वन गए लक्ष्मण ने 14 सालों तक पलकें तक नहीं झपकाईं थीं। समूचे वनपथ में वे एक सजग प्रहरी की भांति पल-पल बड़े भाई की सेवा में रहे। इसी कारण जब युद्धभूमि में मेघनाद की बर्छी से घायल होकर लक्ष्मण मूर्छित हो जाते हैं तो श्रीराम करुण विलाप करते हुए कह उठते हैं कि अब मैं मां सुमित्रा और उर्मिला को क्या मुंह दिखाऊंगा... यदि आज लक्ष्मण नहीं उठा तो मैं भी अपने प्राण त्याग दूंगा...फिर जब लक्ष्मण के हाथों मेघनाद का वध होता है तो अत्यंत हर्षित हो छोटे भाई को

हृदय से लगाकर कहते हैं, मेघनाद का अंत लक्ष्मण जैसा यती सन्यासी ही कर सकता था। वाकई भाई की भाई के प्रति प्रेम व सद्भाव की कितनी उच्च अवस्था है यह! दूसरी ओर भरत का अग्रज श्रीराम के प्रति प्रेम, त्याग व समर्पण की पराकाष्ठा है। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास भरत जी के श्रीराम प्रेम की स्तुति करते हुए कहते हैं- "प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना। जासु नेम ब्रत जाइ न बरना।।" वे लिखते हैं कि भरत का चरित्र समुद्र की भांति अगाध है, बुद्धि की सीमा से परे है। सब प्रकार की अनुकूलता हो, विषयभोग के साधन हों फिर मन विषयों में न लगे; यही सच्ची साधुता है, सच्चा धर्म है, जिसकी साकार प्रतिमूर्ति हैं भरत।

श्रीराम के वन जाने के बाद जब कुलगुरु उन्हें राजगद्दी संभालने को कहते हैं तो अपने अकाट्य तर्कों से पूरी राजसभा को निरुत्तर कर श्रीराम को वापस अयोध्या लाने दल-बल समेत चित्रकूट जा पहुंचते हैं। भरत को दल-बल के साथ चित्रकूट में आता देखकर जब लक्ष्मण को उनकी नीयत पर शंका होती है तो श्रीराम ने उनसे कहते हैं कि अयोध्या तो क्या; ब्रह्मा, विष्णु और महेश का भी पद प्राप्त करके भरत को मद नहीं हो सकता। चित्रकूट में भगवान श्रीराम से मिलकर पहले भरत उनसे अयोध्या लौटने का आग्रह करते हैं, किंतु जब श्रीराम रघुकुल के वचन की दुहाई देते हैं तो वे विवश हो उनकी चरण-पादुका ले अयोध्या लौट आते हैं और उन चरण-पादुकाओं को राजसिंहासन पर सुशोभित कर नंदीग्राम में तपस्वी जीवन बिताते हुए चौदह वर्ष तक राज सत्ता का संचालन करते हैं।

अरण्यकाण्ड

केहि बिधि कहाँ जाहु अब स्वामी। कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी।।
अस कहि प्रभु बिलोकि मुनि धीरा। लोचन जल बह पुलक सरीरा।।

अर्थ **मैं किस प्रकार कहूं कि हे स्वामी! आप अब जाइए? हे नाथ! आप अंतर्यामी हैं, आप ही कहिए। ऐसा कहकर धीर मुनि प्रभु को देखने लगे। मुनि के नेत्रों से (प्रेमाश्रुओं का) जल बह रहा है और शरीर पुलकित है।**

श्रीराम का स्मरण जरूरी क्यों?

धार्मिक ग्रंथों के अनुसार श्रीराम वह नाम है, जिसके उच्चारण मात्र से संपूर्ण ईश्वरीय रूपों की आराधना हो जाती है। प्रभुकृपा के द्वार यहीं से खुलते हैं।

■ पंडित मुकेश मिश्रा

श्रीराम परमात्मा के अवतारों में ऐसा अवतार हैं, जिनके नाम की महिमा का व्याख्यान तो स्वयं त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु ,महेश भी नहीं कर सकते। श्रीराम नाम की शक्ति अनंत हैं। जिसकी कोई सीमा नहीं है और सीमा भी कैसे सकती है। श्रीराम नाम को वेदों का प्राण माना जाता है, क्योंकि श्रीराम नाम से प्रणव होता है। जैसे प्रणव से र निकाल दो तो केवल पणव हो जाएगा अर्थात ढोल हो जाएगा। ऐसे ही ॐ में से म निकाल दिया जाए तो वह शोक का वाचक हो जाएगा। प्रणव में र और ॐ में म कहना आवश्यक है। इसलिए श्रीराम नाम वेदों का प्राण भी है। श्रीराम नाम लोक और परलोक में निर्वाह करने वाला होता है।

लोक में यह देने वाला चिंतामणि और परलोक में भगवान दर्शन कराने वाला है। वृक्ष में जो शक्ति है, वह बीज से ही आती है। इसी प्रकार अग्नि, सूर्य और चंद्रमा में जो शक्ति है, वह श्रीराम नाम से आती है। श्रीराम के दोनों अक्षर मधुर और सुंदर हैं। मधुर का अर्थ रचना में रस मिलता हुआ और मनोहर कहने का अर्थ है कि मन को अपनी और खींचता है। राम-राम कहने से मुंह में मिठास पैदा होती है। दोनों अक्षर वर्णमाल की दो आंखें हैं। श्रीराम के बिना वर्णमाला भी अंधी है। अमृत के स्वाद और तृप्ति के समान श्रीराम नाम है। राम कहते समय पहले मुंह खुलता है और फिर म कहने पर बंद होता है। जैसे भोजन करने पर मुख खुला होता है और तृप्ति होने पर मुंह बंद होता है। इसी प्रकार 'रा' और 'म' अमृत के स्वाद और तोष के समान है। 'राम-राम' शब्द जब भी प्रणाम के अर्थ में प्रयुक्त होता है तो इसमें दो बार उच्चारण हो जाता है। ऐसा कहने के पीछे भी एक वैदिक दृष्टिकोण है। पूर्ण ब्रह्म का मात्रिक गुणांक 108 है। वह 'राम-राम' कहने से पूरा हो जाता है, क्योंकि हिंदी वर्णमाला में 'र' 27 वां अक्षर है। 'आ' दूसरा अक्षर और 'म' 25 वां अक्षर, इसलिए सब मिलाकर जो गुणांक बनता है वह है 54 और 'राम-राम' कहने से 108 हो जाता है, जो पूर्ण ब्रह्म का द्योतक है। इसलिए केवल 'राम-राम' का उच्चारण करने मात्र से ही समस्त सृष्टि के देवताओं की आराधना हो जाती है।

राम दरबार से घर में समृद्धि

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, प्रतिदिन राम दरबार की पूजा करने से मोक्ष और मुक्ति मिलती है और कुंडली के ग्रह-दोष दूर होते हैं।

■ अनीता जैन

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, घर में श्रीराम दरबार लगाकर पूजा करने से परिवार के संकट टल जाते हैं और श्रीराम जी की भी कृपा बनी रहती है। श्रीराम दरबार में उनकी पत्नी देवी सीता, भाई भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न और हनुमान बैठे होते हैं। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार, श्रीराम धर्म के प्रतीक हैं तो लक्ष्मण काम के प्रतीक हैं। वहीं, भरत मोक्ष के प्रतीक माने जाते हैं तो शत्रुघ्न को अर्थ का प्रतीक माना गया है। काम हमेशा धर्म से संयुक्त रहता है, इसलिए अन्य दो भाइयों की अपेक्षा लक्ष्मण ही श्रीराम के साथ वनवास गए थे, जिससे धर्म का काम संपन्न हो सके। वहीं, अर्थ अर्थात आधार यानी कि शत्रुघ्न अयोध्या का आधार माने गए हैं। इसलिए वह वनवास भोगने श्रीराम के साथ न जा सके थे। मोक्ष का प्रतीक माने जाने वाले भरत अयोध्या वासियों के लिए उद्धार का संकेत लेकर आए थे। इसी कारण से उन्होंने श्रीराम के खड़ाऊ की पूजा की।

वास्तु के अनुसार, घर की पूर्व दिशा में श्रीराम दरबार की तस्वीर लगाएं। इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा। ऐसे में घर के सदस्यों की सेहत बेहतर होगी और घर का वास्तुदोष दूर होगा। बहुत सामान्य सी बात है कि परिवार में जब सब लोग एकसाथ रहते हैं तो उनमें कभी-कभी तो कुछ मन-मुटाव या विवाद भी अवश्य होंगे। वास्तु विज्ञान में ऐसे बहुत से धार्मिक उपायों का वर्णन है, जिससे कि इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

घर में श्रीराम दरबार लगाने से घर में मिल-जुल कर रहने की भावना प्रबल होती है, जिसमें सभी का मान-सम्मान करने की भावना का सृजन होता है और आपस में प्रेम बढ़ता है। घर में लगे श्रीराम दरबार के घर के सभी सदस्यों को दर्शन करना चाहिए। ऐसा करने से घर के सभी सदस्यों की सोच-समझ में सकारात्मकता का प्रवाह बढ़ जाता है। सभी सदस्यों में एक-दूसरे के प्रति समर्पण, त्याग, सहयोग की भावना बढ़ने लगती है और घर की आर्थिक स्थिति और मजबूत होने लगती है। माना जाता है कि भगवान श्रीराम की पूरे दरबार के साथ पूजा-अर्चना करने से घर में सद्भाव और सौभाग्य आता है। साथ ही घर से नकारात्मकता दूर रहती हैं। हालांकि, कुछ लोग त्योहारों में ही रामदरबार लगाते हैं और उसकी पूजा करते हैं।

अरण्यकाण्ड

मित्र करइ सत रिपु के करनी। ता कहँ बिबुधनदी बैतरनी।।
सब जगु ताहि अनलहु ते ताता। जो रघुबीर बिमुख सुनु भ्राता।।

अर्थ मित्र सैकड़ों शत्रुओं की-सी करनी करने लगता है। देवनदी गंगाजी उसके लिए वैतरणी (यमपुरी की नदी) हो जाती है। हे भाई ! सुनिए, जो श्रीरघुनाथजी के विमुख होता है, समस्त जगत उसके लिए अग्नि से भी अधिक गरम (जलानेवाला) हो जाता है।

TORQUE
Since 1985

“ गाओ
मीआं मलहार
या भीमपलासी,
TOREX कॅफ
सिरप है
तो अलविदा
खांसी ”

TOREX®

COUGH SYRUP है तो अलविदा खांसी

Follow us on: /TorexSyrup /TorexSyrup /TorexSyrup

For more information, please call or WhatsApp us: +91 977 921 4455 / care@torquepharma.com

जहां-जहां राम, वहां-वहां अयोध्या

राम राज्य की कल्पना को आज भी आदर्श माना जाता है। राम राज्य और श्रीराम का राजधर्म पूर्णत: सत्य और धर्म पर आधारित है।

■ आशुतोष वार्ष्णेय

जब भगवान श्रीराम वन जाने लगे, तो महाराज दशरथ पुत्र वियोग के कारण अस्वस्थ हो गए, इस पर सभी माताओं ने श्रीराम को वन जाने से रोकना चाहा, परंतु उन्होंने महान आदर्श प्रस्तुत करते हुए पिता से अधिक पिता के वचनों की मर्यादा रखी। राजधर्म के चलते उन्होंने अपनी प्राणप्रिय सीता का त्याग किया। राजधर्म, मर्यादा और अपने वचनों को पालन करने के लिए श्रीराम ने अपने अनुज लक्ष्मण का भी त्याग किया। अयोध्या के राजा श्रीराम ने मृत्यु के देवता काल से वार्ता के बीच किसी और के न आने का वादा किया था। द्वार पर श्रीलक्ष्मण तैनात थे। संयोगवश कुछ समय बाद महर्षि दुर्वासा का आगमन हुआ। महर्षि दुर्वासा ने आते ही निर्देश दिया कि लक्ष्मण जाकर उनके आने की सूचना श्रीराम को दे। इस पर लक्ष्मण ने विनम्रता के साथ महर्षि दुर्वासा से क्षमा मांगी, लेकिन महर्षि क्रोधित होकर संपूर्ण अयोध्या को शाप देने लगे। महर्षि दुर्वासा के शाप से पूरी अयोध्या नगरी को बचाने के लिए लक्ष्मण ने श्रीराम और काल की वार्ता के बीच गए, जिसका परिणाम यह हुआ कि राजा श्रीराम ने उन्हें त्यागने का फैसला कर लिया, जिसके बाद लक्ष्मण ने अपने प्राण त्याग दिए। धर्म-नीति के साथ मर्यादा और राजधर्म का पालन करना श्रीराम ने अपने पिता दशरथ से ही सीखा था। श्रीराम के राज्याभिषेक होने से पूर्व महाराजा दशरथ ने श्रीराम को राजधर्म का उपदेश देते हुए बताया था कि ''एक राजा का अर्थ है सन्यासी हो जाना। एक राजा का अपना कुछ नहीं होता है, सबकुछ राज्य का हो जाता है, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर अपने राज्य और प्रजा के हित के लिए अपने प्राण भी त्यागने पड़े तो उसे संकोच नहीं करना चाहिए, क्योंकि राजधर्म सर्वोपरि है।'' राजधर्म और मर्यादा का पालन करने वाले श्रीराम जन चेतना में व्याप्त हैं। श्रीराम मंदिरों से बाहर आकर लोक कल्याण करते हैं, इसलिए कहा जाता है, जहां-जहां राम, वहां-वहां अयोध्या।

अरण्यकाण्ड

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि।।

अर्थ श्रीरघुवीर का यश भव (जन्म-मरण)-रूपी रोग की (अचूक) दवा है। जो पुरुष और स्त्री इसे सुनेंगे, त्रिशिरा के शत्रु श्रीरामजी उनके सब मनोरथों को सिद्ध करेंगे।

घने मुलायम रहेगें बाल सालों साल अपके बालों का रखें ख़्याल

दमदार-असरदार

अब झड़ते बालों से छुटकारा

5 समस्या निवारक आयुर्वेदिक ट्रीटमेंट

• कमजोर बाल | • झड़ते बाल | • दोमुहें बाल | • रुसी व सिकरी | • असमय सफेदी

"गंजापन आ जाना आजकल के युवाओं में समस्या बनती जा रही है | बालों का झड़ना, एंड्रोजिनिक एलोपेसिया आपके शरीर में DHT हार्मोन्स के ज्यादा होने से होता है | इसके अन्दर बाल पतला होना शुरू हो जाते है अक्सर लोग अपने बालो की Care तब करते है जब उनके बाल बहुत अधिक संख्या में झड़ना शुरू हो जाते है। आयुर्वेद के अनुसार हेयर फॉल 7 Stages का होता है जिसमे से शुरू की 4 Stages तक का हेयर फॉल सचमुच रोका जा सकता है उसमे ऊपर की Stages में Hair Transplant Suggest किया जाता है | 25 से अधिक दुर्लभ जड़ी - बूटियों एवं 100% तिल तेल से निर्मित **ख्याल केश तेल** बालों की जड़ो को मजबूत करता है और नए बाल लाने में मदद करता है | **ख्याल केश तेल** पाँच हजार वर्ष प्राचीन तेल पाक विधि से निर्मित है।"

M.R.P. ₹ 187/-

ख़्याल केश तेल

100 % आयुर्वेदिक

HELPLINE:- 9878877768

Available at:- www.khayalhealth.com | amazon | Flipkart | meesho | TATA 1mg

शत्रु और मेहमान, सबके हैं राम

भगवान श्रीराम दया और करुणा के सागर हैं, इसलिए उनके हृदय में सभी जीवों के लिए सदा ही सौहार्द और मैत्रीभाव विद्यमान रहता है।

■ आशुतोष वार्ष्णेय

भले ही कैकेयी और मंथरा के कारण श्रीराम को वनवास हुआ, रावण ने सीता का अपहरण किया, तब भी श्रीराम ने मर्यादा, सत्यशीलता और कृपाशीलता का परिचय देते हुए इनमें से किसी को भी अपना शत्रु नहीं माना। मर्यादा, शील और चरित्र की स्थापना के लिए परब्रह्म परमात्मा ने मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के रूप में अवतरित होकर नर-लीला की। श्रीराम का हृदय ब्रह्मांड से भी अधिक विशाल है, उदारता उनके आचरण को धारण कर कृतार्थ होती है।

रामचरितमानस के सुंदरकाण्ड में वर्णित है, विभीषण ने राजसभा में लंकापति रावण को धर्म और नीति के बारे में बताते हुए कहा,

जो आपन चाहै कल्याना।
सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो परनारि लिलार गोसाईं।
तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।

'जो मनुष्य अपना कल्याण, सुंदर यश, सुबुद्धि, शुभ गति और नाना प्रकार के सुख चाहता हो, वह हे स्वामी! पर स्त्री के ललाट को चौथ के चंद्रमा की तरह त्याग दे।' इसके बाद विभीषण ने रावण को यहां तक समझाया कि चौदह भुवनों का एक ही स्वामी हो, वह भी जीवों से बैर करके ठहर नहीं सकता है-

चौदह भुवन एक पति होई।
भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।

विभीषण के बार-बार समझाने पर भी रावण को सुमति नहीं आई। क्योंकि रावण को काल प्रेरणा दे रहा था, जिसके कारण उसकी बुद्धि वक्र हो गई। लेकिन दशरथ नंदन श्रीराम के हृदय में शत्रुभाव का नितांत अभाव है। उन्होंने प्राणप्रिय वल्लभा सीता का हरण करने वाले रावण के प्रति भी हमेशा उदारता दिखाई, रावण को पग-पग पर धर्म के पालन और मर्यादा की रीति समझाई परंतु अपने अहंकार के कारण रावण सब कुछ समझकर भी कुछ न समझ पाया। भले ही कैकेयी और मंथरा के कारण ही भगवान श्रीराम को चौदह वर्ष का वनवास हुआ, तब भी श्रीराम ने उन्हें भी दोषी नहीं ठहराया और सदा उनका सम्मान किया। श्रीराम में वचनबद्धता ऐसी है कि प्राण जाए पर वचन न जाई, शरणागतवत्सलता इतनी कि राक्षसराज के अनुज को भी हृदय से लगा लिया। धैर्यशीलता, सत्यशीलता और कृपाशीलता की संयुक्त झलक श्रीराम के चरित्र में बार-बार मिलती है।

उत्तरकाण्ड

दोहा-कलिजुग सम जुग आन नहिं जौं नर कर बिस्वास।
गाइ राम गुन गन बिमल भव तर बिनहिं प्रयास।।

अर्थ यदि मनुष्य विश्वास करे, तो कलियुग के समान दूसरा युग नहीं है। क्योंकि इस युगमें श्रीरामजी के निर्मल गुण समूहों को गा-गाकर मनुष्य बिना ही परिश्रम संसार रूपी समुद्र से तर जाता है।

एक राम घट-घट में बैठा

रामचरित मानस में दो बहुत महत्वपूर्ण कांड हैं, बालकांड और उत्तरकांड। जिसमें रुहानियत के गूढ़ विषय के बारे में खोल-खोलकर बताया गया है कि राम जो हैं , वह प्रतीक हैं परमात्मा का।

असल में राम के मायने हैं रमा हुआ। जो रम रहा है उसे श्रीराम कहते हैं। एक अक्षर है उसके बारे में बताने के लिए और एक पावर है, जो सृष्टि के कण-कण में समाई हुई है। जब हम किसी पूर्ण गुरु की सहायता से अपने अंतर में उस श्रीराम के नाम की पावर से जुड़ते हैं तो हम इस सृष्टि के कण-कण में पिता-परमेश्वर का रूप देखते हैं और इसी नाम के जरिये हम अपने मनुष्य जीवन के ध्येय, अपने आपको जानना और पिता-परमेश्वर को पाना भी इसी जीवन में पूरा कर सकते हैं। रामचरितमानस में दो बहुत महत्वपूर्ण कांड हैं, बालकांड और उत्तरकांड।

संत राजिन्दर सिंह जी महाराज

पेंटिंग : वृन्दावन दास

बालकांड और उत्तरकांड में श्रीराम और नाम की महिमा के बारे में तुलसीदास जी ने यहां तक कह दिया कि अगर श्रीराम भी चाहें तो वह नाम की बड़ाई नहीं कर सकते, क्योंकि हमारी आत्मा और परमात्मा का जो मिलाप है यह नाम की दौलत के बगैर मुमकिन नहीं है और जो यह नाम की दौलत है, यह कोई वक्त का संत-महात्मा ही दे सकता है। जब हम रामचरितमानस के सही मायने भूल गए तो संत गुसाईं तुलसीदास जी महाराज ने फिर तुलसी साहब का रूप धारण किया। इंसानी शरीर में आए और घट रामायण लिखी। घट रामायण में उन्होंने रामचरितमानस के मायने बड़े खोल-खोल के समझाए हैं। अपनी बानी में उन्होंने चार प्रकार के राम बताए हैं। वो फरमाते हैं -

एक राम दशरथ का बेटा,
एक राम घट-घट में बैठा।
एक राम का सकल पसारा,
एक राम सबहूं ते न्यारा।

एक तो वह है, जो राजा दशरथ के पुत्र थे, जिनके बारे में सारा संसार जानता है। दूसरा राम घट-घट में बैठा हुआ है। इससे उनका तात्पर्य हमारे मन से है। आगे तीसरे राम के बारे में वह कहते हैं कि एक राम का सकल पसारा यानि काल, जिसके हुकम से ये सारी सृष्टि चल रही है और चौथा राम सबहूं ते न्यारा। ये कौन से राम हैं? यह संतों के श्रीराम हैं। ये वही श्रीराम हैं, जिनका स्मरण भक्त हनुमान जी ने किया था। ये वही राम हैं, जो अहिल्या को मिले थे। ये वह राम हैं, जो शबरी को मिले थे। अगर दिल में श्रद्धा हो तो हमें भी मिल सकते हैं।

रघुवीर के तीर अचूक

भगवान श्रीराम विभीषण से कहते हैं जो रथ विजय दिलाने वाला है, उसके दो चक्र हैं। शौर्य और धैर्य।

■ पंडित मुकेश मिश्रा

युद्धा के रूप में रघुवीर के तीर अचूक थे। बाल्यकाल में ही भगवान श्रीराम ने बड़े-बड़े राक्षसों का संहार किया। वनगमन के दौरान 14 वर्षों तक उन्होंने साहस, वीरता और निर्भयता का उदाहरण प्रस्तुत किया। रावण युद्ध के दौरान विभीषण को श्रीराम का यह उपदेश हम सबके लिए भी है, जिस रथ पर आरूढ़ होकर के हम सदा सर्वत्र विजय होकर अपने जीवन पथ को आलोकित कर सकते हैं। वह धर्म रथ है और इसके जितने भी अंग है उन सब का वर्णन धर्म रथ में प्रभु ने किया है। जिस समय रावण और श्रीराम जी का युद्ध चल रहा था। रावण रथ पर आरूढ़ था और भगवान राम पैदल ही उससे युद्ध कर रहे थे।

'रावण रथी विरथ रघुवीरा,
देख विभीषण भयो अधीरा।'

कथाओं के अनुसार, भगवान श्रीराम के रथ में जितने भी अंग हैं, सब विद्यमान हैं। भगवान श्रीराम क्षत्रिय कुल (सूर्यवंश) में अवतरित हुए हैं, इसलिए इस प्रसंग के माध्यम से क्षत्रिय के धर्म का वर्णन करते हैं। शौर्य, तेज, धृति, दाक्ष्य और युद्ध से परामुख न होना, दान करना, ईश्वर भाव रखना। एक क्षत्रिय का स्वाभाविक कर्म है।

भगवान श्रीराम विभीषण से कहते हैं, जो रथ विजय दिलाने वाला है, उसके दो चक्र हैं। शौर्य और धैर्य। भगवान श्रीराम में शौर्य इस प्रकार का है कि विश्वामित्र जी की यज्ञ रक्षा के समय अकेले मारीच, ताड़का और सुबाहु को सेना समेत परास्त कर देते हैं। खर-दूषण से युद्ध करते समय अकेले ही राघव चौदह सहस्त्र सेना समेत उन्हें परास्त कर देते हैं और धैर्य इतना है कि कितने भी संकट आ जाएं, लेकिन उनका मन कभी भी धर्म से विचलित नहीं होता। भगवान श्रीराम को वनवास के समय कितना उत्तेजित किया गया। वाल्मीकि रामायण के अनुसार, लक्ष्मण कुमार तक ने भी कहा, परंतु भगवान श्रीराम ने धैर्य नहीं खोया। वह अपने सिद्धांत पर अटल रहे, इसलिए शौर्य और धैर्य ही धर्म रथ के दो चक्र हैं। सत्य और शील ही इस रथ के ध्वजा और पताका हैं।

मनुष्य यदि धर्म रथ पर बैठा है तो धर्म में उसकी स्थिरता का लक्षण यदि कोई है तो वह है सत्य और शील, क्योंकि वह दूर से ही दिख जाता है। भगवान श्रीराम कभी भी सत्य से विचलित नहीं होते। जबकि महाराज दशरथ राम के वनवास से विचलित हो गए थे। उन्होंने श्रीराम को वापस लाने के लिए अपने मंत्री सुमंत से भी अनुरोध किया, लेकिन श्रीराम ने सत्य मार्ग को नहीं छोड़ा।

उत्तरकाण्ड

बिनु कारन दीन दयाल हितं। छबि धाम नमामि रमा सहितं।।
भव तारन कारन काज परं। संभव दारुन दोष हरं।।

अर्थ बिना किसी करण दीनों पर दया तथा उनका हित करने वाले और शोभा के धाम। मैं श्री जानकी जी सहित आपको नमस्कार करता हूं। आप भव सागर से तारने वाले हैं, कारण रूपा प्रकृति और कार्यरूप जगत दोनों से परे हैं और मन से उत्पन्न होने वाले कठिन दोषों को हरने वाले हैं।

AI ASTROLOGER
ASTHOLOGY WITH TECHNOLOGY

आपकी
किस्मत में भगवान का लिखा सब जानता है!

AI ASTROLOGER

पूछ के देख लो ...

Visit : www.aiastrologer.com

जाने सबकुछ बिल्कुल FREE

आज 21.01.2024 दोपहर 12 बजे से 1 दिन के लिए aiastrologer.com पर

FOR MORE INFORMATION CALL : 9821397676

राम रसायन तुम्हरे पासा !

श्रीगुरु चरण सरोज रज, निजमन मुकुरु सुधारि।
बरनउं रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुं लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजे। कांधे मूंज जनेउ साजे।।
शंकर सुवन केसरी नंदन। तेज प्रताप महा जग वंदन।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्री रघुबीर हरषि उर लाए।।
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहां ते। कबि कोबिद कहि सके कहां ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्र जोजन पर भानु। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लांघि गए अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैंसारे।।
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना।।

आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हांक ते कांपै।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरे सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकन्दन राम दुलारे।।
अष्टसिद्धि नौं निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरिभक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जय जय जय हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बन्दि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महं डेरा।।

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

सुंदरकाण्ड

हरषे सब बिलोकि हनुमाना। नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा। कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा ॥

अर्थ

हनुमान जी को देखकर सब हर्षित हो गए और तब वानरों ने अपना नया जन्म समझा। हनुमानजी का मुख प्रसन्न है और शरीर में तेज विराजमान है, (जिससे उन्होंने समझ लिया कि) ये श्री रामचंद्रजी का कार्य कर आए हैं।

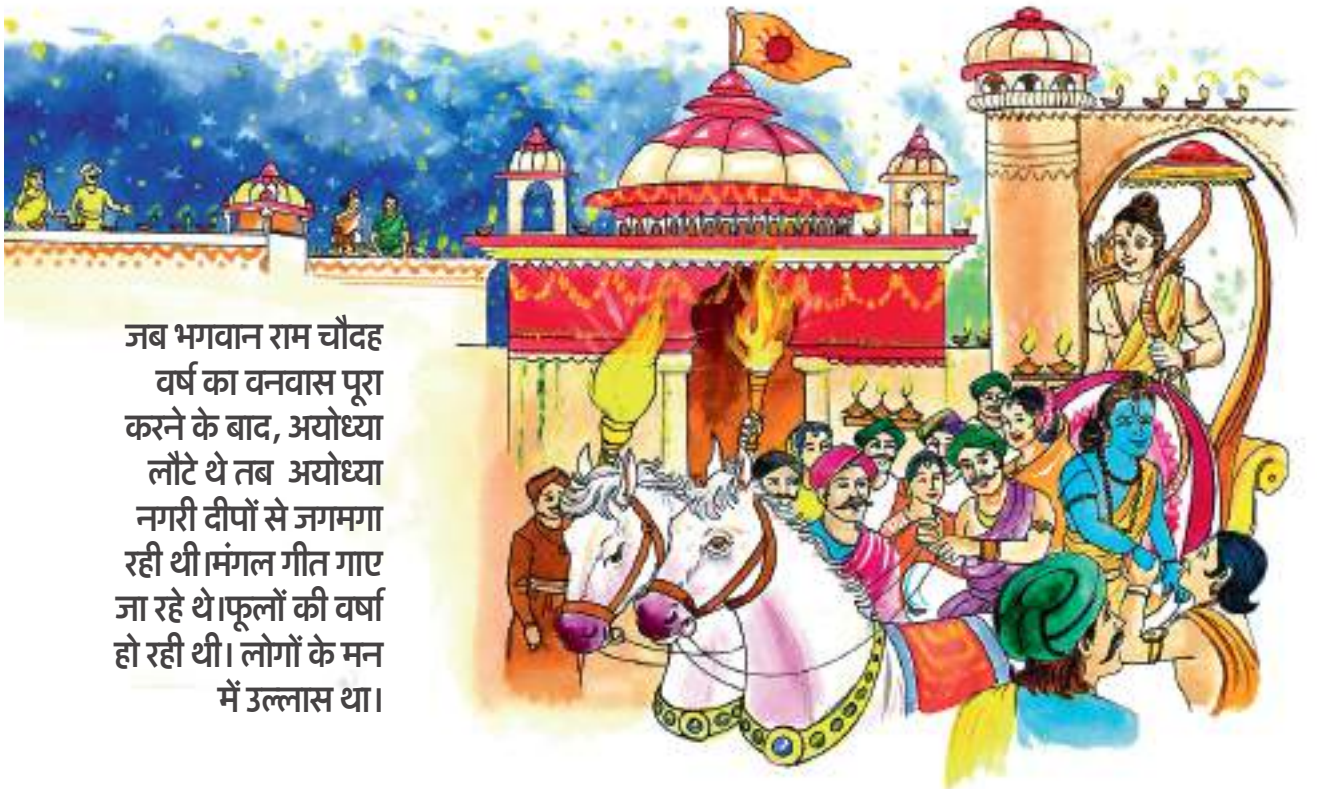

जब भगवान राम चौदह वर्ष का वनवास पूरा करने के बाद, अयोध्या लौटे थे तब अयोध्या नगरी दीपों से जगमगा रही थी।मंगल गीत गाए जा रहे थे।फूलों की वर्षा हो रही थी। लोगों के मन में उल्लास था।

और फिर अयोध्या लौटे राम

कहते हैं, दीपावली पहली बार अयोध्या नगरी में मनाई गई थी। जब त्रेतायुग में भगवान श्रीराम अपने चौदह वर्षों का वनवास पूरा कर अपने साकेत धाम अयोध्या पधारे थे। शास्त्रों के मुताबिक भगवान श्रीराम जब वनवास के लिए अयोध्या से गए थे। वनवास जाते ही भगवान श्रीराम के प्रिय भाई भरत ने प्रण लिया और श्रीराम से कहा था कि जब तक आपका चौदह वर्ष का वनवास रहेगा तब तक मैं आपके कुशल-मंगल रहने के लिए चौदह वर्षों तक अयोध्या स्थित नंदीग्राम में रह कर तप करूंगा। साथ ही यदि आप चौदह वर्ष के वनवास को पूरा करने के अंतिम दिन अयोध्या नहीं आए तो आपका यह भाई भरत अपने प्राण को त्याग देगा।

इसलिए जब श्रीराम वनवास पूरा कर अयोध्या लौटे, तब उन्होंने सबसे पहले अपने प्रिय भाई भरत को प्रेम पूर्वक हृदय से लगाया। इसी क्षण को दुनिया राम-भरत मिलाप के नाम से जानती है।

जब भगवान श्रीराम चौदह वर्ष का वनवास पूरा करने के बाद, अयोध्या लौटे थे तब नगरवासियों ने मार्ग पर पुष्प बिछा दिए थे। दीपों की पंक्तियां जगह-जगह लगा दीं। उस समय अयोध्या नगरी दीपों से जगमगा रही थी। घर आगमन की खुशी में अयोध्यावासी मंगल गीत गा रहे थे।

टैरो कार्ड

इस सप्ताह का कार्ड

द माइनर आर्काना : द कोर्ट कोर्ड और भूमि तत्व, भूमितत्व राशि का नकारात्मक पहलू है। यह हठी, रूढ़िवादी, और कई बार लालची व भौतिकवादी हो जाते हैं। इनमें हावी होने की प्रवृत्ति होती है।

19 से 25 जनवरी, 2024

मेष / 21 मार्च-20 अप्रैल

द पेज ऑफ सोड्र्स

अपनी ताकत को परखने के लिए चुनौतियों को पूरा करने की कोशिश करें। सच्चाई को देखें। अपनी इच्छा और जरूरत के प्रति ईमानदार रहें। आवाज उठाने का समय है। **विशेष :** कष्ट में पड़े व्यक्तियों की सहायता करें। आपका मकसद सर्वश्रेष्ठ के लिए जाना है। **शुभ रंग :** हरा, **शुभ दिन :** बुधवार, **उपाय :** मंगलवार को मूंग भिगोकर बुधवार की सुबह दुर्गा मंदिर में चढ़ाएं।

वृष / 21 अप्रैल-20 मई

द टू ऑफ कप्स

रिश्तों पर फोकस रहेगा और चुंबकीय आकर्षण पैदा होगा। पुराने संबंधों में एक अच्छा तालमेल जन्म लेगा। एक-दूसरे का सम्मान करें तथा पृथक व्यक्तित्व को भी स्वीकार करें। **विशेष :** बाहर से आप बेशक शांत रहते हैं, लेकिन आपके क्रोध से सभी डरते हैं। **शुभ रंग :** सिल्वर, **शुभ दिन :** सोमवार, **उपाय :** पंचधातु के शिवलिंग की पूजा करें।

मिथुन / 21 मई-21 जून

द नाइन ऑफ वैन्ड्स

भावनात्मक कष्ट और खराब संबंधों से मुक्त होने का समय है। अतीत के कारण पछतावे में न रहें। अपनी ताकत और कमजोरी दोनों को समझें। चुनौती का सामना करें। **विशेष :** लेखन और बोलने का ढंग आपको लोकप्रिय बनाता है। **शुभ रंग :** पर्पल, **शुभ दिन :** बृहस्पतिवार, **उपाय :** शहद, सफेद सरसों, मालती के फूल, मुलैठी युक्त जल से स्नान करें।

कर्क / 22 जून-23 जुलाई

द टेन ऑफ सोर्डस

जीवन में एक नया दौर आरंभ होने से पहले पुराने व्यवहार, भावनात्मक बोझ और दबाव से मुक्ति पाएं। भ्रम में न पड़े। इस समय आप बुरे मोड़ पर हैं, गहराई में जाएं और अपना रास्ता खोजे। **विशेष :** आपके जटिल, मुलायम, क्रोधी स्वभाव को सहारा चाहिए। **शुभ रंग :** हल्का सलेटी, **शुभ दिन :** बुधवार, **उपाय :** हरी इलायची और तुलसीदल का सेवन करें।

सिंह / 24 जुलाई-22 अगस्त

द लवर्स

आपका दिल, दिमाग पर हावी रहेगा। आप डर, संदेह और दुनियादारी भूलकर प्रेम में डूबी रहेंगी। प्रेम त्रिकोण की स्थिति बन सकती है। प्रेम का सही अर्थ समझें और जिम्मेदारी दिखाएं। धोखेबाजी का अर्थ समझें। **विशेष :** आपकी वफादारी पर शक नहीं किया जा सकता है। **शुभ रंग :** लाल बिंदुयुक्त सफेद, **शुभ दिन :** बुधवार, **उपाय :** बकरी के दूध का सेवन करें।

कन्या / 23 अगस्त-22 सितंबर

द थ्री ऑफ सोड्र्स

अपनी भावनाओं को समझेंगी तो समस्या तक पहुंच पाएंगी और समाधान निकाल पाएंगी। प्रेम में निराशा, धोखेबाजी या मन को चोट पहुंच सकती है। अपने मुद्दे को समझें और दूसरों से सलाह लें। **विशेष :** आप इच्छाशक्ति, निष्ठा और पूर्ण ढंग से कार्य करने में विश्वास करती हैं। **शुभ रंग :** पीला, **शुभ दिन :** बुधवार, **उपाय :** गणेश जी की पूजा करें।

पूनम वेदी
टैरो कार्ड रीडर

तुला / 23 सितंबर-23 अक्तूबर

द फाइव ऑफ पेंटाकल्स

संबंधों से कष्ट मिल रहा है और आपको प्रेम की तलाश है, तो सहायता लें। सहायता लेने में झिझकें नहीं। कहीं इसकी वजह ज्यादा घमंड, पुराने घाव खुल जाने का डर या धन का लालच तो नहीं है। **विशेष :** दूसरों की खुशी के लिए खुद को बंधक न बनाएं। **शुभ रंग :** नेवी ब्लू, **शुभ दिन :** बुधवार, **उपाय :** आंवला, गोरोचन, बहेड़ा हरड़ युक्त जल से स्नान करें।

वृश्चिक / 24 अक्तूबर-21 नवंबर

द पेज ऑफ पेंटाकल्स

व्यावहारिक बनें और सत्यपरक उद्देश्य का चुनाव करें। नए प्रोजेक्ट से जुड़ने का समय। इस समय कोई विश्वसनीय कामगार, व्यवस्थित मित्र आपके सपनों को हकीकत में बदल देगा। **विशेष :** आपका मन धर्म और अलौकिक बातों में आस्था रखता है। **शुभ रंग :** गुलाबी, **शुभ दिन :** शुक्रवार, **उपाय :** घर में सफेद फूल चांदी के जार में सजाएं।

धनु / 22 नवंबर-21 दिसंबर

द नाइट ऑफ वैन्ड्स

विरोधाभासी स्थिति का संकेत मिल रहा है। जीवन के बारे में आवेशपूर्ण निर्णय लेने होंगे। अपने साहसी भाव को व्यक्त करें और कुछ हटकर करने का प्रयास करें। तीव्र आकर्षण अनुभव होगा। **विशेष :** आपकी सकारात्मक सोच अंधेरे में भी उजाला देख लेती है। **शुभ रंग :** स्कारलेट, **शुभ दिन :** मंगलवार, **उपाय :** गुड़ और मसूर की दाल का सेवन करें।

मकर / 22 दिसंबर-19 जनवरी

जस्टिस

दांव पर लगे मामलों को बुद्धिमानी पूर्वक समझें। सत्य को समझने के लिए तार्किक तथा निष्पक्षता से काम करें। महत्वपूर्ण निर्णय समझदारी से लें। कानूनी मामले, समझौते तथा कर्ज अदायगी से जुड़ा लाभदायी समय है। **विशेष :** आपकी मुख्य सोच आर्थिक सुरक्षा से जुड़ी रहती है। **शुभ रंग :** आसमानी, **शुभ दिन :** शुक्रवार, **उपाय :** पांच कन्याओं को दूध मिश्री दें।

कुंभ / 20 जनवरी-18 फरवरी

द टेन ऑफ वैन्ड्स

जरूरत से ज्यादा काम व कर्तव्य और संबंध का दबाव परेशान कर सकता है। बोझ को कम करने का प्रयास करें। बातें कम करें, काम अधिक। हंसी उल्लास में समय बिताएं। खुद को समय दें। **विशेष :** आप खुले दिल से प्रेम करती हैं तथा बदले में प्रेम चाहती हैं। **शुभ रंग :** सफेद, **शुभ दिन :** मंगलवार, **उपाय :** तुलसीदल और काली मिर्च का सेवन करें।

मीन / 19 फरवरी-20 मार्च

जजमेंट

खुद में बदलाव लाने की जरूरत है। परिवार, मित्र और प्रेमी के प्रति अपने व्यवहार को बदलें। रिश्तों को नए दृष्टिकोण से समझें। सत्य को समझकर निर्णय लें। रूकावट दूर करके नए भविष्य के प्रति सजग रहें। अतीत की गलती को माफ करें। **विशेष :** आपकी उपस्थिति सभी पसंद करते हैं। **शुभ रंग :** मैजेंटा, **शुभ दिन :** मंगलवार, **उपाय :** तांबे का सिक्का पर्स में रखें।